[Social Issues and Environmental Problems, Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] 2394-3629(P) ISSN- 2350-0530(O) ISSN-
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3261

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

राग रागिनी और पर्यावरण का परस्पर सम्बन्ध

वर्षा अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक संगीत (गायन), शासकीय कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, उज्जैन

सारांश
मन और उससे जुड़ा मस्तिष्क जिस प्रकार हमारे भौगोलिक पर्यावरण को देखकर उस पर आसक्त होता है और शरीर को अच्छे स्वच्छ पर्यावरण का साथ मानव मन को सुख शान्ति की ओर ले जाता है।
भारतीय संगीत में विभिन्न राग–रागनियों का ध्यान पर्यावरण के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। ऐसा सर्वविदित है कि एक अच्छा सोच, अच्छे विचार, अच्छा संगीत आदि सभी अच्छे पर्यावरण का निर्माण करते हैं।
नदी का बहना, वायु का प्रवाहमान होना, वृक्षों की सांय–सांय सभी एक सुखद संगीत ध्वनि का निर्माण करते हैं जो अलौकिक है, सार्वभौमिक है। परन्तु हमारे सामवेद में ऊँ का उच्चारण, मंत्रों का उच्चारण उद्दात, अनुद्दात, स्वरित के साथ उसकी ध्वनि का वायुमण्डल पर असर मानव मन और मस्तिष्क पर भौगोलिक पर्यावरण के साथ मानसिक पर्यावरण को तरोताजा कर स्फूर्ति और चेतना प्रदान करता है।
अतः पर्यावरण के संरक्षण हेतु यदि जैविकी, वानस्पतिकीय व वैज्ञानिक प्रयासों के साथ–साथ भारतीय संगीत की समस्त राग–रागिनियों का भी प्रयोग किया जाएगा तो वह उत्तम और सम्पूर्ण साधन होगा। आज के इस वर्तमान युग में पर्यावरण सरंक्षण महत्वर्पूण मुद्दा है व इस पर बहस होना इसके उपायों को खोजना और उनको प्रतिपादित करना विश्व के कल्याण के पथ पर अग्रसर होना है।

प्रस्तावना
प्रत्येक मनुष्य का जीवन प्रकृति के अकूत सौन्दर्य के साथ विचरण कर आत्म आल्हादित होता है।
मन और उससे जुड़ा मस्तिष्क जिस प्रकार हमारे भौगोलिक पर्यावरण को देखकर उस पर आसक्त होता है और शरीर को अच्छे स्वच्छ पर्यावरण का साथ मानव मन को सुख शान्ति की ओर ले जाता है। परन्तु मैं मुखातिब हूँ विषय राग–रागिनी और पर्यावरण का पारस्परिक आंतरिक सम्बन्ध।
यह विषय अत्यंत अगाध व सार्वभौमिक है, जब से प्रकृति ने मानव इतिहास स्वर या यूँ हम कहे कि आदि–अनादि काल से प्रकृति पर्यावरण और संगीत एक दूसरे के अभिन्न अंग है। मानव मन जिन संवेदनाओं को ग्रहण करता है और मुग्ध होता है उसमें सर्वप्रथम स्थान संगीत का है।
हमारे भारतीय वाङग्मय में संगीत मनुष्य से नहीं अपितु परब्रह्म परमेश्वर ब्रह्मा जी से उत्पन्न माना गया है।
भारतीय संगीत में विभिन्न राग–रागनियों का ध्यान पर्यावरण के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। ऐसा सर्वविदित है कि एक अच्छा सोच, अच्छे विचार, अच्छा संगीत आदि सभी अच्छे पर्यावरण का निर्माण करते हैं। यहाँ पर्यावरण से तात्पर्य है जल, वायु, आकाश, हरियाली, जंगल, नदियाँ, झीलें, संगीत इन सभी पर्यावरण के साधनों में बढ़ोतरी कैसे करता है यह मैं आपको सिद्ध करने जा रही हूँ। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में कोशिकाएँ विकसित होती रहती है, तभी तक शरीर स्वस्थ्य रहता है। उसी प्रकार वृक्ष, हरियाली, जंगल, नदियाँ, झीलें सुरक्षित रहेगी तो पर्यावरण भी सुरक्षित होगा। विश्व के अनेक देशों में सांगितिक यात्राओं के माध्यम से मुझे वहाँ के भौगोलिक पर्यावरण के साथ रूबरू होने का मौका मिला। वहाँ के जन–जीवन, पशु–पक्षी, पेड़–पौधों पर अनेकानेक भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रयोगों की साक्षी रहने का अवसर भी मिला। नदी का बहना, वायु का प्रवाहमान होना, वृक्षों की सांय–सांय सभी एक सुखद संगीत ध्वनि का निर्माण करते हैं जो अलौकिक है, सार्वभौमिक है। परन्तु हमारे सामवेद में ऊँ का उच्चारण, मंत्रों का उच्चारण उद्दात, अनुद्दात, स्वरित के

साथ उसकी ध्वनि का वायुमण्डल पर असर मानव मन और मस्तिष्क पर भौगोलिक पर्यावरण के साथ मानसिक पर्यावरण को तरोताजा कर स्फूर्ति और चेतना प्रदान करता है।
मेरी नजर में भारतीय संगीत विश्व का सबसे बड़ा ध्यान योग है जिससे आप ध्यान को न केवल कुछ क्षणों के लिए अपितु मिनटों व घण्टों तक एकाग्र कर सकते हैं जो शारीरिक व्यायामों से पूर्णतः संभव नहीं हो पाता। आज के इस वैज्ञानिक युग में भी संगीत वैज्ञानिक रूप से भी मन की एकाग्रता को सिद्ध करने हेतु प्रथम और सार्थक कड़ी है जिसे नकारा नहीं जा सकता है वरन् उसकी स्वीकारोक्ति ही सार्वभौमिक सत्य है। भारतीय शास्त्रीय संगीत, फिल्म संगीत, उप–शास्त्रीय संगीत की विभिन्न शैलियाँ जैसे चेति, कजरी व लौक गीतों ने हमारे पर्यावरण का ऐसा चित्रण किया है जिसमें वह प्रत्येक मनुष्य को पर्यावरण के प्रति आसक्त करता है, सजग करता है, सचेत करता है। शास्त्रीय संगीत में राग देस में एक बहु प्रचलित बंदिश मेहारे बन बन डार डार मुरला बोले, राग मियां मल्हार बरसन लागी बुंदरिया आदि, फिल्म संगीत में गरजत बरसत सावन आयो रे, गीतों में सावन के सुहाने मौसम में, राग मियां मल्हार में निबद्ध है, कजरी गीतों में घिर घिर आयी रे बदरिया राग मिश्र पीलु में निबद्ध, प्रसिद्ध राजस्थानी लोक गीत माण्ड सावण सावण में करो आदि अनेकानेक रचनाएँ पर्यावरण से हमें रूबरू करवाती है।
चूँकि हमारा भारतीय संगीत ध्यान को केन्द्रित करने का परम योग्यतम साधन है, अतः एकाग्रचित्त होने व राग–रागिनियों के ध्यान की पर्यावरण के साथ आलिंगनता सिद्ध करने हेतु आपके समक्ष विभिन्न मूलग्रंथों के संस्कृत भाषा व उसमें हिन्दी अर्थ सहित उदाहरण प्रस्तुत हैः–

1. आनन्द भैरव

कैकिपिच्छघरं नागस्वरहस्तं जटायुतं।
आनन्दभैरवं ध्याये विल्वमूलनिवासिनम्।।

रागसागरः

मयूर–पुच्छ धारण करने वाले, नागस्वर हाथ में लिए हुए, विल्व वृक्ष के मूल में वास करने वाले, उन जटा–धारी 'आनन्दभैरव' का ध्यान करता हूँ।

2. आसावरी

श्रीखण्डशैलशिखरे शिखिपिन्छवस्त्रा, मानङ्गमौक्तिकमनोहरहारवल्ली।
आकृष्य चन्दनतरोरूगरगं वहन्ती, सासावरी वलयमुत्पलनीलकान्तिः।।

दामोदरः

कमल के समान नील कान्ति से युक्त 'आसावरी' मलय पर्वत के शिखर पर मयूर के पंखों के वस्त्र पहने हुए, गज–मुक्ताओं' की मनोहर हार–लता धारण किए हुए तथा चन्दन तरू से सर्प को खींचकर (उसका) कंगन पहने हुए (शोभित) है। इसका अन्य नाम 'असावेरी' है।

3. गौडी

रसालनव्यांकुरकर्णपूरा कादम्बिनी यामलमन्जुदेहा।
पीयूषनिष्यन्दिमृदुस्वनाढ्यज्ञ गौडी नियुक्ताधिककौतुकेन।।

श्रीकण्ठः

आम के नवीन पल्लवों के कर्णपूर धारण करने वाली, श्याम वर्ण के सुन्दर शरीर वाली मेघमाला–स्वरूपा 'गौडी' रागिणी (कानों में) अमृत–सा निचोड़ने वाले सुन्दर नाद से सम्पन्न है।

4. भैरव

श्रुतिस्वरमहीदधिं सकलतालमानामृतं, शिवार्चितमनोहरं भसितलेपिताङ्ग सदा।
जटामुकुटभासुरं शिशुशशिप्रभाभौलिकम्, कपालभरणं भजे नटनकौशलं भैरवम्।।

रागसागरः

जो श्रुतियों और स्वरों का सागर है, समस्त तालों और मान का अमृत है, पार्वती के द्वारा अर्चित होने से मनोहर हो गया है, सदा अंगों पर भस्म लगाता है, जटा रूपी मुकुट से कान्तिमान् रहता है, अभिनव में कुशल है, कपाल धारण करता है तथा जिसका मस्तक खंडचन्द्र की छटा से दीप्तमान् रहता है, उस 'भैरव' को भजता हूँ।

गंगाधरः शशिकला तिलकस्त्रिणेत्रः, सर्पैः विभूषिततनुर्गजकृत्तिवालाः।
भास्वत् त्रिशूलकर एव नृमुण्डधारी, शुभ्राम्बरो जयति भैरव आदिरागः।।

संगीतदर्पणे दामोदरः

जो गंगा धारण करता है, चन्द्रकला का तिलक लगाता है, तीन नेत्रों से युक्त है, सर्पों से विभूषित है, गजचर्म का वस्त्र ओढ़ता है, चमकता हुआ त्रिशूल हाथ में रखता है, नर–मुण्ड की माला पहनता है, श्वेत (भस्म रूपी) वस्त्र धारण करता है, उस आदिराग 'भैरव' की जय हो।

5. मेघरागध्यान

नीलोत्पलाभवपुरिन्दुसमानवस्त्रः पीताम्बरस्तृषिचातकयाच्यमानः।
पीयूषमन्दहसितो घनमध्यवर्ती वीरेषु राजति युवा किल मेघरागः।।

दामोदरः

जिसका शरीर नील कमल के समान कान्तिवान् है, मुख चन्द्र के समान सुन्दर है और मन्द हास अमृत–सा मनभावन है, जो बादलों के बीच विराज रहा है और जिससे प्यासे चातक (स्वाति की बूँद) की याचना कर रहे हैं, वह पीताम्बरधारी युवा 'मेघराग' वीरों के मध्य शोभित है।

6. वराली

विवदकुसुमभूषां संदृतालीं सदालीं मधुरमृदुलवाक्यैस्तोषयन्तीं वलन्तीम्।
मलभिदुपलनीलां भार्गवे ध्यानलीलां मम मनसि सदा तां चिन्तये श्रीवरालीम्।।

रागसागरः

पुष्पों के आभरणों पर विवाद करती हुई, सखियों से घिरी हुई, मधुर और नम्र वचनों से सन्तोष देती हुई, शिव के ध्यान के लिए आकुल होती हुई, इन्द्रनील मणि के समान श्याम वर्ण वाली उस श्रीवराली का अपने मन में सदा ध्यान करता हूँ।

7. मल्हारी

मृणालतन्वी पिककण्ठनादिनी गाननच्छलेन स्मरति प्रियं स्वकम्।
विपचिकामन्जुलपाणिरूत्तमा मल्हारिका यौवनभारसन्नता।।

श्रीकण्ठः

जिसका कमल–तन्तु के समान कृश शरीर है तथा कोकिल के कंठ के समान मधुर स्वर है, जो विपंची वीणा अपने कोमल हाथ में लिए है और यौवन के भार से मानो झुक गई है, वह उत्तम 'मल्हारी' गायन के बहाने अपने प्रियतम का स्मरण कर रही है।

किसी एक विद्वान साहित्यकार ने बहुत खूब लिखा है किः–

सखियों से आकाश में चिढ़कर बोली चील
मनुज स्वार्थवश नगर की सुखी सुन्दर झील

अतः पर्यावरण के संरक्षण हेतु यदि जैविकी, वानस्पतिकीय व वैज्ञानिक प्रयासों के साथ–साथ भारतीय संगीत की समस्त राग–रागिनियों का भी प्रयोग किया जाएगा तो वह उत्तम और सम्पूर्ण साधन होगा। आज के इस वर्तमान युग में पर्यावरण सरंक्षण महत्वर्पूण मुद्दा है व इस पर बहस होना इसके उपायों को खोजना और उनको प्रतिपादित करना विश्व के कल्याण के पथ पर अग्रसर होना है।

सन्दर्भ

1. *रागसागरः*
2. *संगीत दामोदरः शुभंकर कृत*
3. *श्रीकण्ठः,*
4. *रस एवं संगीत, प्रो. स्वतन्त्र शर्मा*
5. *संगीत मासिक, राग रागिनी ध्यान अंक जनवरी*
6. *भरत नाट्य शास्त्र, भरत*
7. *संगीत निबन्ध सागर, डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग*
8. *संगीत दर्पण, दामोदरकृत*
9. *नग्माते आसफी, अहमद रजा खान*
10. *रागमाला, पं. जीवराम दिक्षित कृत*